॥ सुयं मे आउसं ॥

श्रुतसंवर्धन का संवाद-सेतु

श्रुतदीप

वर्ष - प्रथम • वि.सं. २०७३ • प्रवेशांक जून २०१७

श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन
जिनशासन की श्रुतपरंपरा हेतु समर्पित संस्था

विश्वस्त मंडल
भरतभाई जे. शाह
किरीटभाई एस. शेठ
डॉ.जितेन्द्र बी. शाह
राजेंद्र एम्. बांठिया
उमंगभाई वी. शाह
मनोजभाई एम्. शाह
अभयभाई बी. शाह

संचालन समिति
रमेशभाई ओसवाल
नीलेशभाई बी. शाह
ललित एस. गुंदेचा
रतनजी मेडतिया
सुधीरभाई कापडिया
योगेशभाई शाह
ओमजी ओसवाल
परेश कापडिया
जयेश कामदार
कुशल मेहता
सचिन शाह
मितुल धनेशा
प्रकाश शाह

श्रुतभवन संशोधन केंद्र - संकल्पना और भूमिका

श्रुतभवन संशोधन केंद्र, मात्र कोई ईमारत या संस्था नही हैं, बल्कि एक सुनिश्चित संकल्पित-परियोजना है। श्रुतभवन के संकल्प की भूमिका एवं श्रुतभवन के विषय की जानकारी से पूर्व, `शास्त्र' क्या है ? इस संदर्भ में सारासार विचार करना हमारी प्राथमिक आवश्यकता है। शास्त्र की जानकारी से पूर्व, शास्त्र-गर्भित धर्म क्या है? यह समझना और भी जरूरी है।

धर्म अर्थात् क्या ? इस बारे में हम सबके मन में भिन्न-भिन्न विचार व्याप्त हैं। धर्म शब्द के आज लगभग दो सौ से अधिक वैश्विक अर्थ चल रहे हैं, परंतु धर्म की वैश्विक (Global) और प्रामाणिक सरल व्याख्या क्या हो सकती है? इस प्रश्न की साधारण और सर्वसमावेशक व्याख्या यह हो सकती है कि, - हम आज जैसे हैं, इससे और अधिक बेहतर बन सकें। यह है धर्म की दिशा का मुख्य प्रवाह। लगभग विश्व की तमाम आध्यात्मिक धाराओं का सार इस व्याख्या में समाया हुआ है। रास्ते में किसी का गिरा हुआ `वॉलेट' उसके मालिक तक पहुंचा देने के लिए अगर मन आतुर बनें,- तो यह है धर्म की कक्षा में आने का प्रयास। धर्म की इस व्याख्या के अनुसार, गिरे से गिरा हुआ पतित व्यक्ति भी पवित्र बनने का प्रयास करता है, तो लगेगा कि वह धर्म की परिधियों में प्रवेश कर रहा है। धर्म की यह व्याख्या सापेक्ष है।

वर्तमान युग ३G `मोबाईल' के संग सक्रिय है। गुगल द्वारा एक `एप्लिकेशन' प्रस्तुत की गई है, जिसका नाम है-, `ग्लोबल पोझिशनींग सिस्टम' (GPS)। हम कहाँ खडे हैं? हमें जहाँ जाना है, वहाँ तक जाने का सीधा और सरलतम रास्ता कौन-सा है? यह हमें पता नही है। GPS हमें उस इच्छित स्थान तक पहुंचने का सीधा और सरल रास्ता बतलाने में मददगार बनता है। हम वह रास्ता देख नहीं पाते, उपग्रह उस मार्ग को देखकर हमें बतलाता है।

जगत् के श्रेष्ठतम शिखर पर पहुँचने का रास्ता भी हमें पता नही है। प्रबुद्ध पूर्व-महापुरूषों ने उस रास्ते का सीधा और सरल मानचित्र बनाकर हमारी नजरों के सामने प्रस्तुत कर दिया है। बस, उसी का नाम है- शास्त्र। जीवन में अच्छे से अच्छा बनना है, तो शास्त्र की संगत और उनसे मार्गदर्शन पाना जरूरी है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शास्त्र की महत्ता सर्वोच्च है।

हमारे शास्त्रों में कौन-कौन से और कैसे-कैसे सत्य छिपे हैं, यह जानने के लिए यहाँ केवल एकमात्र उदाहरण काफी है कि- पानी वायु से पैदा होता है। यह बात दो सौ वर्ष पूर्व विज्ञान ने शोध लगाकर हमारे सामने रखी है। जैन आगम सूत्रकृतांग में यही बात आज से लगभग ढाई हजार साल पहले ही लिखी जा चुकी है।

ऐसे असंख्य छिपे हुए (अज्ञात) सत्यों को जानने के लिए, सूत्रों पर शोध-संशोधन (Research) हो, तो ऐसे अनेक सत्य प्रकाश में आने लगेंगे। श्रुतभवन संशोधन केंद्र ने `संशोधन' शब्द को बडी व्यापक दृष्टि से लिया है,- जो नहीं मिल रहा है, उसे ढूंढ निकालना।

उपरोक्त प्रक्रिया के लिए सूत्र और `थिअरी' के साथ एक से जुडी अन्य कडीयों को ढूंढने, जांचने के लिए प्राचीन शास्त्र की उपलब्धता जरूरी है। दूसरी बात, शास्त्र में क्या लिखा है? उन शब्दों के पीछे कौन-सा अर्थ छिपा है? कई

दि.६ नवंबर २०१६, श्रीमद राजचंद्र मिशन धरमपूर के संस्थापक श्री राकेशभाई झवेरी का श्रुतभवन में आगमन एवं `आत्मशुद्धिप्रकाश' ग्रंथ का विमोचन पश्चात पूज्य गुरुदेव गणिवर्य श्री वैराग्यरतिविजयजी म.सा. के साथ ध्यान के विषय में वार्तालाप। श्रुतभवन से अभिप्रेरित होकर आपने अपना अभिप्राय प्रस्तुत किया - `श्रुतभवन में श्रुतभक्ति की सर्वोत्तम कक्षा का कार्य हो रहा है। यथासंभव इसका व्यापक प्रचार आवश्यक है।'

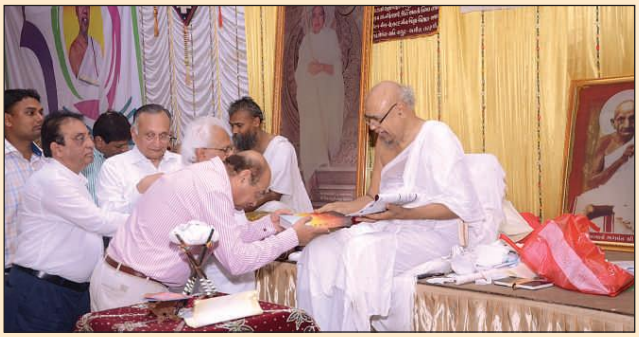

दि.२९ फरवरी २०१७ परम शासन प्रभावक पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय मुनिचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में श्री गोवालिया टँक जैन संघ, मुंबई में कल्पविशेष चूर्णि ग्रंथ भाग-१,२ और ३ का विमोचन संपन्न हुआ।

बार दिखाई देता है कि, साधारण शब्दों में भी काफी महत्त्वपूर्ण अर्थ भरे होते हैं। उदाहरणार्थ, - कल्पसूत्र में **ते णं काले णं** शब्द बार-बार आता है। यहाँ `ण' शब्द का कोई स्पष्ट अर्थ ध्वनित नही हो रहा है फिर भी इसका उपयोग क्यों हुआ है? वास्तव में यह संकेत मिला है कि इसका यहाँ शब्दरूप के बजाय आकृति रूप में उपयोग हुआ है। अब प्रश्न था कि यह आकृति कौन-सा संकेत देती है? इस संदर्भ में लिपि-विज्ञान का आधार लेकर अनेक प्रयोग किये गए, परंतु कोई सार्थक संकेत हाथ नहीं लग पाया। एक ही विषय की अनेक प्रत भिन्न-भिन्न ग्रंथ भंडारों में उपलब्ध हैं। उनमें कहीं तो ऐसे सूत्र छिपे पडे होंगे। उन्हें ढूंढ निकालने के लिए अनेक पांडुलिपियों (Manuscripts) का निरीक्षण जरूरी होगा। ` रिसर्च ' के लिए ` सर्च ' करना पडेगा। श्रुतभवन संशोधन केंद्र का कार्यक्षेत्र यही है। ` रिसर्च ' के लिए ` सर्च '।

अक्षरों का ` सर्च ' करने के लिए लिपि का ज्ञान आवश्यक है। हमारे पास जो ज्ञान उपलब्ध है, वह Out Of Date नहीं है। शास्त्र Out Of Date नहीं है। संस्कृत भाषा Out Of Date नहीं है, बल्कि काफी Advance है। बहुत सारे कारणों से इस भाषा की परिपूर्णता गुप्त है। इसे समझने की सार्थक दृष्टि काम में लायी जाये, तो ढेरबंध कार्य साध्य हो सकेंगे।

सारांश इतना ही है कि- सामाजिक, नैतिक, भौतिक अथवा आध्यात्मिक विकास साध्य करने की सही दिशा चाहिए, तो इसका मूल हमारे शास्त्रों मे प्रचुरता से उपलब्ध हैं। श्रुतभवन इस मूल को मजबूत करने के लिए कटिबद्ध है।

श्रुतभवन का लक्ष्य है कि- भारत की किसी भी प्राचीनतम लिपि में लिखे गये दस्तावेजों को पढा जा सकें, ऐसी क्षमताओं को समृद्ध किया जाये। आज उपलब्ध लगभग ४२ से ५० लिपियों के रहस्य खोजे जा सकें, ऐसे विद्वानों को प्रशिक्षित करने का उपक्रम श्रुतभवन में जारी है।

श्रुतभवन हस्तलिखित पांडुलिपियों में समाहित श्रुतज्ञान की निष्पक्ष भाव से सुरक्षा, संशोधन और संवर्धन करने के पुनित लक्ष्य के साथ सबके विचार, सहकार और मार्गदर्शन की अपेक्षा रखता है।

अप्रगट ग्रंथ परिचय : अष्टाह्निका धुराख्यान

आचार्य श्री भावप्रभसूरिजी रचित अष्टाह्निका धूराख्यान नामक कृति, पर्युषणा अष्टाह्निका व्याख्यान के नाम से भी प्रचलित है। यह कृति अब तक अप्रगट है और इसका विषयनिरूपण भी भिन्न है।

पर्युषण पर्व में अंतिम पांच दिन कल्पसूत्र वांचन होता है। प्रथम तीन दिन पर्युषण के कर्तव्य पर व्याख्यान होते हैं। इस संदर्भ में अनेक कृतियां प्रचलित है। भिन्न-भिन्न गच्छों एवं अलग अलग कर्ताओं के व्याख्यानों का वांचन होता है। जैसे तपागच्छ में लक्ष्मीसूरिजी म.सा.का व्याख्यान, खरतरगच्छ में उपा.श्री क्षमाकल्याणजी म.सा.के व्याख्यान का वांचन होता है। अलग अलग रीतिओं से विषय की प्रस्तुति की जाती है।

आचार्य श्री भावप्रभसूरिजी की इस अप्रगट कृति के अंतर्गत व्याख्यान में आठ दिनों में प्रभुभक्ति के स्वरूप संबंधी उपदेश दिया गया है। जो कि एक पृथक् विशेषता हैं। तदुपरांत आगे आरंभत्याग, निंदात्याग, विकथात्याग, पूज्य साधु-साध्वीजी की भक्ति के उपदेश आदि का वर्णन भी इसमें उपलब्ध है। गुरुभक्ति के बारे में अंगर्षि का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

पर्युषण के प्रथम दिवस जिनेश्वर भगवान के सम्मुख अति तेजस्वी मंगल दीप ज्योत प्रगटानी चाहिए। दूसरे दिन भगवान की भक्ति स्वरूप दो घंट द्वारा घंटनाद करना चाहिए और दोनों बाजुओं से चामर ढालना चाहिए। तीसरे दिन तीन छत्र की शोभा और तीन बार पुष्पांजली अर्पण करना चाहिए। चौथे दिवस भगवान के सामने चतुर्विध संघ सामूहिक स्तवनगान करें अथवा चतुर्विध संघ के अधिकारवाले (जिसमें चतुर्विध संघ की स्तुति का वर्णन हो) का गान करें। पांचवें दिन भिन्न-भिन्न पांच शब्द के वाद्यवृंद के संग प्रभुपूजा-भक्ति की जाये। छठे दिन छः पद (स्वर) के ध्वनिवाले गीत और छः ऋतुओं में उत्पन्न पुष्प द्वारा जिनपूजा करनी चाहिए। सातवें दिन परमात्मा के सम्मुख सात स्वरों से भावित स्तवन गाये जाये। आठवें दिन प्रभु के सम्मुख आठ मंगलदीप प्रगटाना चाहिए।

इस तरह के वर्णनों सहित यह कृति अभी तक अप्रगट है, जो अनोखे पदार्थों को प्रस्तुत करती है। इस कृति का साद्यंत लिप्यंतर प.पू.सा.श्री हर्षरेखाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू.सा.श्री जिनरत्नाश्रीजी म.सा., सा.श्री मधुरहंसाश्रीजी म.सा. एवं सा.श्री धन्यहंसाश्रीजी म.सा.के द्वारा हुआ है।

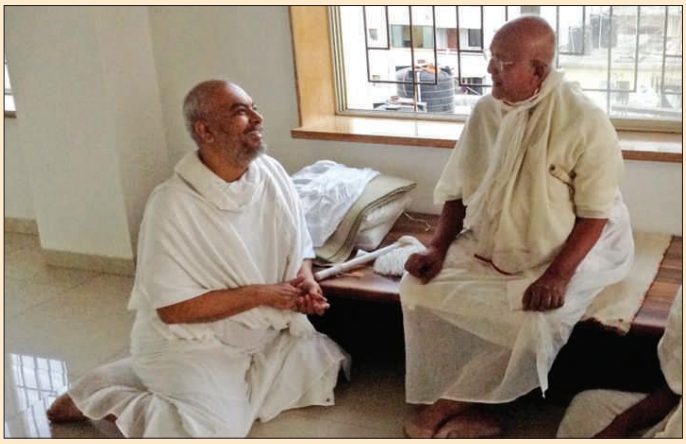

* दि.२१-१०-२०१६, परम पूज्य गच्छाधिपति श्री अभयदेवसूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का श्रुतभवन आगमन हुआ। आपश्री ने यहां चल रही शास्त्र संशोधन प्रकल्पों की जानकारी प्राप्त की।

  उनका अभिप्राय - `श्रुतभवन आने का योग बना, विशेषरूप से इस ज्ञानभंडार की व्यवस्था देखने की इच्छा जागी। संपूर्ण जीवन समर्पित करते हुए स्थिरता के साथ श्री वैराग्यरतिविजयजी म.सा.की ज्ञानोपासना एवं निरंतर परिश्रम खूब खूब अनुमोदनीय लगा। हमारे समृद्ध साहित्य को दीर्घकालीन सुरक्षा प्रदान करने हेतु उनका प्रयत्न अतिसुंदर है। उनके इस सकारात्मक कार्य को चहुं ओर से सहयोग मिलना आवश्यक है।'

* डॉ.वशिष्ठजी झा एवं डॉ.उज्ज्वला झा पुणे विश्वविद्यालय में न्याय एवं दर्शन विभाग में कार्यरत हैं। आप नव्यन्याय के उच्च कोटि विद्वान है।

  श्रुतभवन में दि. ८ जनवरी २०१७ के दिन `लँग्वेज फॉर फिलोसॉफी' विषय पर आयोजित परिसंवाद में आपने संस्कृत भाषा की महत्ता, उपयोगिता एवं प्रस्तुति के संदर्भ में मार्गदर्शन प्रदान किया। उपरोक्त परिसंवाद की शृंखला पूरे वर्ष चालू रहेगी।

* पीटर फ्लुगल `लंदन युनिवर्सिटी' के `साउथ एशियन ओरिएन्टल स्टडीज' (SOAS) के अंतर्गत स्थित जैन विभाग के प्रमुख है। संप्रति आप जैन आचार्यों का जीवनकोश तैयार कर रहे है।

  सर्वश्री भरत शाह, मनोज शाह, राजेंद्र बांठिया एवं ओमजी ओसवाल आदि ने श्रुतभवन की गतिविधियों से उन्हें अवगत कराया।

* श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन के विश्वस्त श्री जितेंद्रभाई बी. शाह (वर्तमान निर्देशक, ला.द.संस्कृति विद्यामंदिर, अहमदाबाद) **`गुजरात गौरव'** की पदवी से सम्मानित हुए है। समस्त जैन समाज के लिए यह गौरवास्पद अवसर बना। आपने अपने दीर्घ ज्ञान, गंभीरता एवं दूरदर्शिता द्वारा जिनशासन को उच्च स्थान प्रदान किया है।

* दि.४ जनवरी २०१७, पूज्य आचार्यदेव श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.का श्रुतभवन में आगमन। पूज्यश्री द्वारा २०० से अधिक हिंदी पुस्तकों का सर्जन हुआ है। श्रुतभवन की गतिविधियों को देखकर आपने अपना मंतव्य प्रगट किया, - "जिस तरह कलिकालसर्वज्ञ आचार्यश्रीजी ने पाटण में रहकर व्याकरण-साहित्य-कोश ग्रंथो का नवसर्जन किया, उसी भाँति यहां प्राचीन ग्रंथो का जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है। आशीर्वाद एवं अनुमोदनाएं।"

श्रुतभवन संशोधन केंद्र मई-जून मास का कार्य विवरण

शास्त्र संशोधन विभाग - वर्तमान प्रकल्प

लोकप्रकाश - पू.मु.वैराग्यरतिविजय गणि

अढार पापस्थानक सज्झाय संग्रह - पू.सा.श्री मधुरहंसाश्रीजी

पृथ्वीचंद्र चरित - पू.सा.श्री धन्यहंसाश्रीजी

उत्तराध्ययनचूर्णि - श्री रूपेन्द्रकुमार पगारिया

नव्यन्यायभाषाप्रदीप - डॉ. उज्ज्वला झा

कारक प्रकरण - डॉ. विनया क्षीरसागर, अतुल मस्के

श्रेयांसजिनचरित - अमित उपाध्ये,

त्रिषष्टिस्मृति- कृष्णा माळी

षडद्रव्यषट्त्रिंशिका - दिनेश उदागे,

क्रियाकलाप - गणेश खेडकर

कविरहस्य - मंजुनाथ भट,

कारकलक्षण - विनय गायकवाड

वर्धमान जिनरत्नकोश विभाग
स्केन हस्तप्रत सूचिपत्र निर्माण

श्रुत के अनुरागी अनेक पूज्य गुरुभगवंतो की पावन प्रेरणा से विविध संघो के विश्वस्तों के सहयोग से स्केनिंग प्रकल्प के अंतर्गत ३ हस्तप्रत भंडारो की कुल ३३०० हस्तप्रतों का `स्केनिंग' कार्य पूर्ण हुआ। इसी तरह उनके १२ फील्ड वाले प्राथमिक सूचिपत्र बनाकर उक्त संघों को समर्पित भी किया गया है। प्रस्तुत सूचिपत्र में कृति, कर्ता, भाषा, लेखन एवं संवत् आदि विषयानुसार वर्गीकृत किये गये हैं।

इससे पूर्व ११ भंडारों की १८,००० हस्तप्रतों का सूचिपत्र बनकर तैयार हुआ है।

पू.आ.श्री मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.ने आवश्यकनिर्युक्ति (टबार्थ) हस्तप्रत संबंधी जानकारी प्रदान की है।

आगामी प्रकाशन

अर्धमागधी व्याकरण, मंडलविचार, लक्षणसंग्रह,
धर्मबिंदू टीका, अष्टाह्निका धुराख्यान

संस्था द्वारा प्रकाशित ग्रंथ

कप्पसुत्तं-१,२,३, बुद्धिसागर, नयामृतम्-२, स्तोत्रसंग्रह,
श्रुतदीप-१, श्रुतसागरना तीरे, समुद्रवहाण संवाद

अभिप्राय

I was very pleased to visit today Shrutbhavan and to establish contact will the wonderful staff working and this institution. I am hugely impressed by the magnitude if the mission and the spirit of liberality concerning the dissemination of knowledge. Thank You.

- **Dragomir Dimitrov** (University of Marburg, Germany)

समाचार

पूज्य मुनिप्रवर श्री संवेगरतिविजयजी म.सा., पू.मु.श्री वैराग्यरतिविजयजी गणिवर का चातुर्मास श्रुतभवन संशोधन केंद्र में,
पूज्य मुनिप्रवर श्री प्रशमरतिविजयजी म.सा.का चातुर्मास वर्धा (नागपुर के पास)
एवं पूज्य सा.श्री जिनरत्नाश्रीजी म.सा. आदि का चातुर्मास दादरा (वापी के पास) है।

परमात्मा!
आइने को स्वच्छ किया
तो मैं दिखा
`मैं' को स्वच्छ किया तो `तूं' दिखा।

- पू.मु.श्री वैराग्यरतिविजयजी गणिवर

प्रबंध संपादक - गौरव के. शाह (९८३३१३९८८३)
सहायक संपादक - सिद्धनाथ गायकवाड

Printed Matter
Posted under clause 121 & 114 (7) of P & T Guide

To,

From

Shrutbhavan Research Centre,
47/48, Achal Farm, Nr. Sachchai Mata Mandir, Ahead of Jain Agam Temple, Katraj, Pune-411046
Mo. 07744005728 Email : shrutbhavan@gmail.com Website : www.shrutbhavan.org